मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में उर्मिला की विरह वेदना

पूनम रानी, शोधार्थी
(एम.ए. हिन्दी नेट),
श्री जगदीश प्रसाद झबरामल टिबरेवाला विश्वविद्यालय, झुंझुनू (राजस्थान)

शोध आलेख सार :

मैथिलीशरण गुप्त हिंदी साहित्य में द्विवेदी युग के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। गुप्तजी खड़ी बोली के महत्वपूर्ण कवि थे। पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से खड़ी बोली को अपनी रचनाओं का माध्यम बनाया। आचार्य द्विवेदी जी गुप्त के गुरु एवं प्रेरक थे। इसलिए उन्होंने अपने महाकाव्य 'साकेत' में उनकी प्रेरणा को स्वीकार करते हुए इन शब्दों में स्वीकार किया है-

करते तुलसीदास भी कैसे मानस नाद?
महावीर का यदि उन्हें मिलता नहीं प्रसाद।

मैथिलीशरण गुप्त की रचनाएं :

जयद्रथ वध (१९१०), भारत भारती (१९१२), पंचवटी (१९२५), झंकार (१९२९), साकेत (१९३१), यशोधरा (१९३२), जय भारत (१९५२)

मुख्य शब्द : प्रज्ज्वलित, उत्कृष्ट, सहानुभूति, कर्तव्य-परायणता, धर्मचारिणी।

उर्मिला के विरह वेदना का चित्रण :

उर्मिला अपने मन रूपी मंदिर में अपने पतिदेव की प्रतिमा स्थापित करके स्वयं उनके विरह में प्रज्ज्वलित होती हुई आरती स्वरूप बनी हुई थी। उसकी आंखों में केवल अपने प्रिय पति की मूर्ति थी। अन्य कुछ दिखलाई ही नहीं देता था। उसने सभी सुख भोग भुला दिए थे। श्री मैथिलीशरण गुप्त ने साकेत के नवम सर्ग में उर्मिला की विरह-वेदना को व्यक्त किया है। उन्होंने उसके पति विशेष सहानुभूति प्रकट की है। इसमें कवि ने रामायण के एक गौण पात्र को प्रमुखता देने का भरपूर प्रयत्न किया है। उर्मिला का विरह वर्णन निम्न शीर्षकों में प्रस्तुत किया जा सकता है :-

१. साकेत की उर्मिला:

रामायण की सबसे मूक एवं गंभीर नायिका है। त्याग के मामले में शायद ही रामायण में उर्मिलासे अधिक त्यागमयी नारी का वर्णन नहीं हुआ है, कर्तव्यनिष्ठा, वचन निभाने वाली, निश्छल एवं सरल स्वभाव की नारी थी। मां जानकी ने उर्मिला को साध्वी एवं शुभ दर्शना माना है। पति के कर्तव्य को अपना सब कुछ समझती थी। पति के वचन के लिए और स्वयं पति को वचन देने के कारण उन्होंने १४ वर्ष तक पति के विरह में जीवन व्यतीत किया। लक्ष्मण श्रीराम के साथ वनवासी बने तो वहीं उर्मिला महलों से रहकर भी सन्यासिनी के रूप में रही। वह एक अच्छी पुत्री, बहन, अच्छी संस्कारी बहु एवं उत्कृष्ट चरित्र की सह नायिका थी। अपनी बहन सीता के लिए अपना जीवन अर्पण करने को तत्पर रहती थी। बहन के सुख में अपना जीवन देखती थी। इस वचन को निभाने में उसने रघुकुल की रीति की मर्यादा का पालन किया है। उर्मिला की वियोगावस्था की नाना अंतर्वृतियों का विस्तार है। जिसके बीच-बीच में अत्यंत उच्च भावों की व्यंजना है।प्रेम के शुभ प्रभाव से उर्मिला के हृदय की उदारता का प्रसार हो गया।

रह चिर दिन तू हरी-भरी,
बढ़, सुख से बढ़, सृष्टि सुंदरी!

२. विरह में प्रकृति निरूपणः

वर्षा ऋतु का आगमन होने पर उर्मिला प्रकृति व उसके उपादानों-वर्षा, चांद, फूल इत्यादि के प्रति सहानुभूति व्यक्त कर रही हैं।

सुध प्रियतम की मिले मुझे
जन जीवन-दान का तुझे।
हँसो, हँसो हे शाशि, फूल फूलों,
हँसो, हिडोरे पर बैठ झूलो।
यथेष्ट में रोधन के लिए हूँ,
झड़ी लगा दूं, इतना पियेहूँ।
प्रकृति, तू प्रिय की स्मृति मूर्ति है,
जड़ित चेतन की त्रुटि-पूर्ति है।
रख सजीव मुझे मन की व्यथा,
कह सखी, कह, तू उनकी कथा।

हे वर्षा ऋतु! तू सदैव हरी भरी बनी रह। हे सृष्टि की सुंदरी तू बढ़ती रहो, सुख पूर्वक विकसित हो, तुझे देख कर मुझे अपने प्रियतम की याद आ जाती है।

हे चांद! तुम सदैव हंसते रहो। हंसते हुए अपनी चांदनी बिखेरते रहो। हे फूल तुम खिले रहो, लता के हिंडोले में बैठकर झूलते रहो। तुझको बुरे दिन में न देखने पड़ें मैं ही रोने के लिए पर्याप्त हूँ।

हे प्रकृति! तुझे देख कर मुझे अपने प्रियतम की याद बनी रहती है। तुम उन चेतन प्राणियों के कष्टों को दूर करती हो जो दुखों के कारण जड़ सा जीवन जी रहे हैं।

३. विरहिणी उर्मिला का दर्प :

विरहिणी उर्मिला को काम भावना सता रही है। वह कामदेव से कहती है कि मुझे पुष्प न मारो। मुझे कष्ट मत दो, मैं अबला हूं, बाला एवं वियोगिनी हूं। मुझे पति का सान्निध्य प्राप्त नहीं है। मुझ पर कुछ तो दया कीजिए। मैं मानती हूं कि हे कामदेव तुम बसंत के मित्र हो, किंतु है चतुर देव! उस बसंत के मित्र होकर तुम्हें कटु गरल की वर्षा नहीं करनी चाहिए। कारण कि मधु का मित्र भी स्वभाव से मधु होना चाहिए, कटु नहीं हे मदन! तुम कितना भी अपना जाल पसारो मैं उसमें फंसने वाली नहीं हूं। मैं संयम से रहने वाली नारी हूं। मैं भोगिनी बाला नहीं, जो विमोहित होकर सतीत्व छोड़ दे।

अरे कन्दर्प! तुझे यदि रूप का दर्प है तो मेरे पति मुझसे भी अधिक रूपवान हैं।उन पर इसे न्यौछावर कर दे। ले मेरी चरण-धूलि ले जा और अपनी पत्नी रति पर डाल दे।

४. प्राचीनता और नवीनता का समावेश :

उर्मिला के विरह वर्णन में प्राचीन परिपाटी का निर्वाह करते हुए विरहताप तथा अश्रुप्रवाह का समावेश है और उसमें कहीं भी अस्वाभाविकता न होकर सारी जगह मनोवैज्ञानिकता अपनाई गई है। विरह जन्म की अवस्था का उल्लेख कवि निम्न पंक्तियों के माध्यम से करना चाहता है

मानस मंदिर में सती प्रिय की प्रतिमा थाप।
जलती सी इस विरह में नहीं आरती आप।।

५. चित्रकूट में क्षणिक मिलन :

चित्रकूट में सीता के प्रयत्न से लक्ष्मण से उर्मिला की चिर प्रतीक्षित भेंट हुई। इस क्षणिक मिलन से लक्ष्मण को संकुचित देखकर उर्मिला भी त्याग के मार्ग पर निकल पड़ी और प्रिय के चरणों को पकड़कर आंसुओं से भीग उठी। इस क्षणिक मिलन से स्तंभ, रोमांच, अश्रु आदि सात्विक भावों के कारण चित्र करुणा का संचार करने लगता है:-

मेरे उपवन के हरिण, आज वनचारी।
मैं बांध न लूँगी तुम्हें, तजो भय भारी।
गिर पड़े दौड़ सौमित्र प्रिया पदतल में।
वह भीग उठी प्रिय चरण धरे दृग जल में।

उर्मिला का विरहिणी रूप अत्यंत करुणा एवं शोक से पूर्ण है। वह लगातार आंसू बहाती रहती है। वैसे तो साकेत का प्रत्येक पात्र उर्मिला की दयनीय दशा पर आंसू बहाता हुआ दिखाई देता है, फिर भी उर्मिला के आंसुओं का बहना तो स्वाभाविक ही है, क्योंकि जितनी कसक, जितनी वेदना तथा पीड़ा उर्मिला के हृदय में दिखाई देती है उतनी अन्य किसी पात्र में नहीं दिखाई देती। अपनी इस व्यथा के कारण वह कैकेयी जैसे कठोर नारी को भी रुला देती हैं। चित्रकूट में कैकेयी यह बात सबके सामने स्वीकार करती है।

६. उर्मिला की कर्तव्य-परायणता तथा सेवा भावनाः

उर्मिला में कर्तव्य-परायणता की भावना दिखाई देती है। वह वीर क्षत्राणी केवल रण-क्षेत्र में ही कौशल दिखाने की क्षमता नहीं रखती हैं, अपितु वह आहत सैनिकों के घावों पर मरहम पट्टी करने, उन्हें पानी पिलाने

तथा अन्य सेवाएं करने के लिए स्वयं को अर्पित कर सकती हैं:-

वीरों, पर यह योग भला क्यों खोऊंगी मैं।
अपने हाथों घाव तुम्हारे धोऊंगी मैं।
पानी दूंगी तुम्हें न पलभर न भी सोऊंगी मैं।
अपनों का विजय, परों को रोऊंगी मैं।

निष्कर्ष :

वास्तव में गुप्त ने अपने इस आख्यान काव्य में उपेक्षित उर्मिला को बड़े मनोयोग के साथ चित्रित किया है। यह दिव्य सौंदर्य-संपन्न युवती परिवार के साथ-साथ समाज पर भी अपना प्रभाव डालने में सक्षम हुई है। उर्मिला के चरित्र में त्यागमयी, स्वाभिमान, देशप्रेम, कर्तव्य एवं निर अभिमानता के भी गुण मिलते हैं। वह पति परायण नारी, सहधर्मचारिणी से भी ऊपर उठकर नारी के आदर्श को स्थापित करने में सफलता प्राप्त करती है। अतः उर्मिला के चरित्र चित्रण काव्य में सांस्कृतिक परिवेश उपस्थित होता है। सभी के हृदय पर उसने सादा जीवन जीने की अमिट छाप छोड़ी है।

संदर्भ :

१. डहक्टर नगेन्द्र-हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ नंबर ४८८
२. श्री मैथिलीशरण गुप्त-साकेत, पृष्ठ २६५
३. श्री मैथिलीशरण गुप्त-साकेत, पृष्ठ ३००
४. आचार्य रामचंद्र शुक्ल-हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ४०५

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com